02 जनवरी 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 16
जनवरी(प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव : झूम उठी आरोन नगरी

आरोन-गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग दिगम्बर जैन मुमुक्षु संघ ट्रस्ट आरोन के तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 24 दिसम्बर 2021 तक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। 108 फुट ऊँचे विशाल शिखर युक्त भव्य जिनमंदिर में मूलनायक ७६ इंची भगवान महावीरस्वामी, भगवान मल्लिनाथ व भगवान पार्श्वनाथ की मनोहारी पाषाण प्रतिमाएँ तथा भगवान वासुपूज्य व विधिनायक भगवान नेमिनाथ की अष्टधातु निर्मित प्रतिमाएँ विराजमान की गईं।

पंचकल्याणक महोत्सव बाल ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन व पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के सह-निर्देशन में सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा महोत्सव में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों एवं युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के पंचकल्याणक सम्बन्धी प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित सुबोधजी सिवनी एवं ब्र. निखिलजी मुम्बई के व्याख्यानों का लाभ मिला।

महोत्सव में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री अर्पित-अर्पिताजी जैन आरोन, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री अंकुर-रुचिजी जैन आरोन, नेमिनाथ के माता-पिता श्रीमती शकुनदेवी-कैलाशचंदजी जैन आरोन, यज्ञनायक -नायिका श्री अशोककुमार-अनीताजी जैन आरोन एवं राजुल के माता-पिता श्रीमती ज्ञानदेवी-राजकुमारजी जैन अशोकनगर रहे।

धर्मध्वजारोहण श्री प्रकाशचंदजी जैन गुना, पाण्डाल उद्घाटन श्री विमलचंदजी-सुनीलकुमारजी-दीपकजी-अरविंदजी-चेतनजी राधौगढ़ एवं मंच उद्घाटन श्रीमती रविकान्ताजी जैन राधौगढ़ ने किया।

इस अवसर पर शौरीपुर में समुद्रविजय की राजसभा में एवं स्वर्गपुरी में सौधर्म की इंद्रसभा में तत्त्वचर्चा एवं अष्ट कुमारियों द्वारा लगभग 21 नृत्यों की प्रस्तुति दी गई। **गर्भ कल्याणक** के प्रसंग पर सोलह स्वप्न के फलों का विवरण एवं मंदिर-वेदी-कलश-शिखर-ध्वजशुद्धि आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

जन्म कल्याणक पर जन्म के आनन्दवर्धक दृश्यों सहित पाण्डुक शिला पर बालक नेमिकुमार के जन्माभिषेक के उपरान्त प्रसन्नचित्त सौधर्म इन्द्र द्वारा ताण्डव नृत्य एवं रात्रि में पालना झूलन के अवसर पर प्रासंगिक भक्ति गीतों ने सभी का मन मोह लिया।

दीक्षा कल्याणक के वैराग्यमय दिवस पर नेमिकुँवर की बारात के उपरान्त पूर्व के ९ भव-स्मरण व बारह भावना के चिंतवन पूर्वक दीक्षा का निर्णय, लौकांतिक देवों द्वारा अनुमोदना एवं देवों-मानवों की चर्चा विशेष आकर्षण का विषय बनी। रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला ने "कस्तूरी तो नाभि में है" विषयक नाटक प्रस्तुत किया।

ज्ञान कल्याण के दिन मुनिराज नेमिनाथ के आहारदान की विधि, केवलज्ञान की प्राप्ति, समवशरण की रचना एवं दिव्यध्वनि प्रसारण के दृश्यों ने भाव-विभोर कर दिया।

मोक्ष कल्याणक के दिन गिरनार पर्वत की रचना कर भगवान के निर्वाण महोत्सव का दृश्य दिखाया गया। जिनेन्द्र प्रतिमाओं की वेदी पर स्थापना, शिखर पर कलशारोहण-ध्वजारोहण, 3 छत्र, 64 चंवर, भामण्डल, जिनवाणी आदि की स्थापना सहित 50 लाख जाप के लक्ष्य को पूर्ण करता हुआ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर आयोजित कार्यक्रम पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के संचालन में पण्डित विवेकजी शास्त्री, श्री सुबोधजी, श्री देवेन्द्रजी, एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री के सहयोग से कराए गए। समस्त आयोजन में आरोन के श्री अंकितजी व अशीषजी सहित समस्त युवा मण्डल की विशिष्ट भागीदारी रही। ●

(28) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

(गतांक से आगे...)

कुगुरु का निरूपण और उसके श्रद्धानादि का निषेध...

जो जीव विषय–कषायादि अधर्म रूप परिणमित होते हैं, मानादि से स्वयं को धर्मात्मा मानते हैं, धर्मात्मा के योग्य नमस्कारादि क्रिया कराते हैं – इसप्रकार धर्म के आश्रय से अपने को बड़ा मनवाते हैं, उन सभी को कुगुरु जानना।

कुछ जीव तो कुलादि की अपेक्षा से अपने को गुरु मानते हैं। किसी के यहाँ कुलगुरु होते हैं, किसी के यहाँ कुलमाता होती हैं, किसी के यहाँ गुरुभाई होते हैं। ब्राह्मणादिक तो ऐसा कहते हैं कि हमारा कुल ऊँचा है; इसलिए हम सब के गुरु हैं। पण्डितजी उनसे कहते हैं कि उच्चता तो धर्म साधन से होती है, यदि उच्चकुल में उत्पन्न होकर धर्म विरुद्ध आचरण करें, तो उच्चता कैसी?

कोई कहता है कि हमारे कुल में बड़े–बड़े भक्त/धर्मात्मा हुए हैं; इसलिए हम गुरु हैं। पण्डितजी यहाँ बहुत सुंदर तर्क देते हुए अपनी बात कहते हैं कि बड़ों के बड़े तो उत्तम नहीं थे, यदि अनुत्तम पुरुष की संतति में उत्तम कार्य करने से उत्तम मानते हो, तो उत्तम पुरुष की संतति में उत्तम कार्य न करने पर अनुत्तम क्यों नहीं मानते? शास्त्रों में अनेक ऐसे प्रसंग हैं – जहाँ पिता उच्चपद प्राप्त करता है और पुत्र नीचपद प्राप्त करता है या पिता नीचपद प्राप्त करता है और पुत्र उच्चपद प्राप्त करता है।

इसप्रकार कुलापेक्षा गुरुपना मानना युक्ति संगत नहीं है।

कितने ही पट्ट द्वारा अपने को गुरु मानते हैं। पूर्व काल में कोई महंत पुरुष हुआ हो अब उसकी पट्ट (गादी) पर बैठने वाले शिष्य–प्रतिशिष्य आदि को महापुरुषों जैसे गुण न होने पर भी गुरुपना मानते हैं। दक्षिण भारत में तो ऐसा बहुत देखा जाता है कि गुरु की गादी पर जो उत्तराधिकारी नियुक्त होता है, वह गुरु बन जाता है। यहाँ विचार करने योग्य बात यह है कि कोई परस्त्रीगमनादि महापाप करता हो तो गादी पर बैठने मात्र से उसे धर्मात्मा कैसे माने? वास्तव में तो जो गुरु पद योग्य कार्य करे, वही गुरु होगा।

कितने ही लोग तो ऐसे हैं जो सारे पाप कार्यों में प्रवृत्ति करते हैं; परन्तु एक विवाह मात्र के त्यागी होने से अपने को गुरु मानते हैं। उनसे पंडितजी कहते हैं कि एक अब्रह्म ही तो पाप नहीं है, हिंसा, परिग्रह आदि भी तो पाप हैं, उनमें प्रवृत्ति होने पर धर्मात्मा/गुरुपना किसप्रकार मानें? जो विवाहादि का त्याग किया, वह भी धर्म बुद्धि से नहीं किया आजीविका व लज्जा आदि के प्रयोजन से किया है; यदि धर्म बुद्धि से करते तो हिंसादि का भी त्याग करते।

कोई तो वेष धारण करने मात्र से गुरुपना मानते हैं; परन्तु वेष धारण करने से कौन–सा धर्म होता है, जो उसके कारण गुरुपना मानें? वहाँ भी कोई टोपी लगाते हैं, कोई चोला पहनते हैं, कोई चादर ओढ़ते हैं, कोई लाल वस्त्र पहनते हैं, कोई मृगछाला रखते हैं, कोई राख लगाते हैं – इसप्रकार गृहस्थों को ठगने के प्रयोजन से नाना स्वांग बनाते हैं; क्योंकि यदि वेष धारण ना किया हो तो गृहस्थ लोग गुरूपना ही नहीं मानते हैं। देखा भी यही जाता है कि पैंट–शर्ट पहनने वाले को, कुर्ता–पजामा पहनने वाले को कोई गुरु नहीं मानता। यह भोला जगत उस स्वांग को देखकर ठगाता है और वेष से धर्म हुआ मानता है। जिसप्रकार कोई विषयासक्त पुरुष धनादिक से ठगाते हुए भी हर्षित होता है उसीप्रकार यह जीव कुगुरुओं के मिथ्यावेषों द्वारा धर्मरूप धन से ठगाते हुए भी हर्षित होता है। यहाँ श्रद्धा लूट रही है, मान्यता पर पत्थर पड़ रहे हैं, नर्क–निगोद नज़दीक होते जा रहे हैं, इसका विषाद न करता हुआ मिथ्याबुद्धि से हर्षित होता है।

कई लोग नए–नए धर्मों का निरूपण कर स्वयं को धर्मात्मा बताते हैं। डांडिया खेलने में, पोष–बड़ा खाने में धर्म बता कर स्वयं को धर्मात्मा कहते हैं – इसप्रकार धर्म के नाम पर मौज़मस्ती करते हैं। जैसे आज के समय में लोग शिखरजी तीर्थयात्रा करने, सिद्धों का सुमरन करने नहीं जाते; अपितु पिकनिक मनाने के लिए जाते हैं। धर्म के नाम पर मौज़मस्ती करते हैं।

इसप्रकार वेष धारण करने से गुरुपना मानते हैं, सो यह मिथ्या है।

पण्डितजी सच्चे गुरु का स्वरूप बताते हुए कहते हैं कि जिन वेषों में विषय–कषाय को किंचित मात्र भी स्थान नहीं हो, वह वेष ही सच्चे वेष है और वही पूज्यपने को प्राप्त है। जैन परम्परा में तीन वेष ही पूज्य कहे गए हैं।

(1) दिगम्बर मुनिराजों का वेष, (2) 10-11वीं प्रतिमाधारी श्रावकों का वेष, (3) आर्यिकाओं का वेष।

यहाँ कोई कहे कि ये तीन वेष तो पूजने योग्य है ही; लेकिन अन्य वेषधारियों ने जितना धर्मसाधन किया उतना तो भला ही है; उस अच्छे कार्य की प्रशंसा तो करना ही चाहिए।

उसे कहते हैं कि यदि कोई ऊँची पदवी रखकर नीचा काम करे तो वह योग्य नहीं है। जैसे – किसी व्यक्ति ने उपवास किया हो और वह अन्न का एक दाना भी खाए तो पापी है वहीं दूसरी तरफ किसी व्यक्ति ने व्रत(एकाशन) किया हो और वह दो रोटी खाए तो भी वह धर्मात्मा है। यहाँ महत्त्व इस बात का है कि आपने निर्णय

क्या लिया था। धर्मसाधन तो जितना बने उतना ही करना योग्य है; परन्तु ऊँचा नाम रखकर नीचा कार्य करना महापाप है।

इस हुण्डावसर्पिणी काल में ऐसा काल–दोष वर्त रहा है कि विषय–कषाय में आसक्त जीव भी वेष धारण करके अपने आपको गुरुपद के योग्य कहलवाना चाहते हैं। देखो! गृहस्थपने में बहुत परिग्रह रखकर कुछ प्रमाण करे तो भी स्वर्ग का अधिकारी है और मुनिपद में किंचित भी परिग्रह रखे तो निगोदगामी होता है।

लोगों की अज्ञानता तो देखो! कोई यदि छोटी प्रतिमा लेकर उसे भंग कर दे, तो उसे पापी कहते हैं और कोई बड़ी पदवी में रहकर नीचा काम करे तो भी उसे पापी नहीं समझते। जिनशासन में तो कृत के समान ही कारित और अनुमोदना का भी फल कहा है।

मुनिपद लेने का क्रम बताते हुए पण्डितजी तीन बातों की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

1) तत्त्वज्ञान हो, 2) उदासीन परिणाम हो, 3) परिषह सहन करने की शक्ति हो।

सम्पूर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ में यदि कहीं सबसे ज्यादा प्रमाण प्रस्तुत कर अपनी बात को सिद्ध किया है, तो यहाँ छठे अध्याय में किया है, उसमें भी कुगुरुओं के प्रकरण में तो एक के बाद एक लगातार प्रमाण ही प्रमाण प्रस्तुत कर कुगुरुओं को पूजने का बहुत कठोरता से निषेध किया है।

पण्डितजी ने जो गुरुओं का निषेध किया, वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ या राग–द्वेष के कारण नहीं किया; अपितु गुरुओं के स्वरूप का यथार्थ निर्णय के लिए किया है; क्योंकि देव–गुरू–धर्म के निर्णय बिना तो मोक्षमार्ग की शुरुआत ही नहीं होती।

शास्त्रों में कुगुरुओं को विषैले सर्प की उपमा दी है। देखो यदि कहीं सर्प दिख जाए तो उससे बचने के लिए दौड़ लगाता है; लेकिन कुगुरुओं को देखकर जरा भी भयभीत नहीं होता। अरे! सर्प के डसने से तो एक बार ही मरण होता है; लेकिन कुगुरु रूपी सर्प के डसने पर तो अनंत बार मरण होता है, अनंत भव बिगड़ जाते हैं तथा दर्शनपाहुड़ का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जो स्वयं तो सम्यक्त्व से भ्रष्ट हैं और सम्यक्त्वधारियों से अपने पैर पड़वाना चाहते हैं, वे आगामी भव में लूले–गूंगे होते हैं अर्थात् स्थावर होते हैं। सम्यक्त्व भी महादुर्लभ हो जाता है; इसलिए लाज, भय, गारव, यश आदि प्रयोजनों से कुगुरु को पूजना योग्य नहीं है।

इसप्रकार कुल तथा वेष की अपेक्षा से गुरुपना मानने का अनेक प्रमाण व युक्ति सहित निषेध किया; क्योंकि कुगुरु का त्याग न करें तो मिथ्यात्व बहुत पुष्ट होता है; इसलिए इसका सच्चा स्वरूप जानकार अपना कल्याण करो.....। **(क्रमशः)**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र – 2022

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 28 जनवरी 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका(गोपालदासजी बरैयाकृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड – प्रथम वर्ष
शनिवार 29 जनवरी 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड – द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड – प्रथम वर्ष
रविवार 30 जनवरी 2022	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (मौखिक) 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड – द्वितीय वर्ष

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग–1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

– नन्दकिशोर पारिक, प्रबंधक–परीक्षा बोर्ड

साप्ताहिक संगोष्ठियाँ सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : 1) यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर की गतिविधियों के अन्तर्गत दिनांक 05 दिसम्बर 2021 को गोष्ठियों का आयोजन किया गया। प्रात:काल **जैन न्याय** विषय पर सम्पन्न गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, जयपुर ने की। सत्र का संचालन अनिमेष भारिल्ल राधौगढ़ व अनेकांत जैन वासा ने एवं मंगलाचरण प्रियांशु जैन बण्डा ने किया।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से अरिहंत जैन बण्डा एवं उपाध्याय वरिष्ठ से आर्जव माद्रप चुने गए।

2) सायंकाल **अनेकांत–स्याद्वाद** विषय पर सम्पन्न गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संजीवजी शास्त्री, जयपुर ने की। सत्र का संचालन मधुर जैन बड़ामलहरा व धनुष जैन काँचीपुरम् ने एवं मंगलाचरण अरिहंत जैन बण्डा ने किया।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से ज्ञायक शेरी एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष से सक्षम नायक, ललितपुर चुने गए।

3) दिनांक 12 दिसम्बर 2021 को **गुणस्थान चर्चा** विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई। सभा की अध्यक्षता पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री भारिल्ल, जयपुर ने की। मुख्य अतिथि श्री अखिलजी इंदौर एवं निर्णायक पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी रहे। सभा का संचालन अभिषेक जैन भोपाल व दर्शन सिंघई बलेह ने एवं मंगलाचरण स्वयं जैन खनियांधाना ने किया।

गोष्ठी में शास्त्री प्रथम वर्ष से अविरल जैन खनियांधाना एवं शास्त्री प्रथम वर्ष से ही मानस जैन बाँसवाड़ा श्रेष्ठ वक्ता के रूप रहे।

4) दिनांक 24 दिसम्बर 2021 को **जैन श्रावकाचार** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता पण्डित अजितजी शास्त्री, अलवर ने की। मुख्य अतिथि डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया एवं निर्णायक पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री थे। सभा का संचालन निमित्त अजमेरा इंदौर व हितंकर जैन उदयपुर ने एवं मंगलाचरण सम्यक जैन दिल्ली ने किया।

गोष्ठी में शास्त्री तृतीय वर्ष से धनुषकुमार जैन, काँचीपुरम् ने प्रथम स्थान एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष से अमन जैन, अलवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अंतिम गोष्ठी में आभार प्रदर्शन संयम पुजारी खनियांधाना एवं शेष सभी गोष्ठियों में पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

उक्त सभी गोष्ठियों के संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष से शाश्वत जैन भोपाल, संयम पुजारी खनियांधाना, स्वानुभव जैन खनियांधाना एवं सुष्मित जैन सेमारी ने किया।

शास्त्री परिषद अधिवेशन समारोह

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ शनिवार, दिनांक 25 दिसम्बर 2021 को श्री समयसार विद्यानिकेतन आत्मायतन के तत्त्वावधान में पण्डित टोडरमल साहित्य महोत्सव के अन्तर्गत भिण्ड एवं ग्वालियर जिले के समस्त शास्त्री विद्वानों का सम्मेलन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ समस्त शास्त्री विद्वानों द्वारा धर्मध्वजारोहण कर किया गया। तत्पश्चात् टोडरमल साहित्य महोत्सव का उद्घाटन रेखाजी जैन परिवार के कर–कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सुरेशजी जैन ने की।

इस प्रसंग पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के मंगल प्रवचन का लाभ मिला एवं घर–घर पाठशाला योजना की संयोजिका मंजूजी जैन को समयसार विद्यानिकेतन एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ग्वालियर द्वारा स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। साथ ही ग्वालियर से प्रकाशित कैलेण्डर आत्मायतन 2022 का विमोचन किया गया, इसके उपरान्त शास्त्री विद्वानों का अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

विद्यानिकेतन में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी पण्डित नमनजी शास्त्री ने दी एवं कार्यक्रम का संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री ग्वालियर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

अतिथिभवन सोनगढ़ का उद्घाटन समारोह

सोनगढ (गुज.) : दिनांक 19 दिसम्बर 2021 को श्री खुशाल जैन अतिथि गृह, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक अतिथि भवन व भोजनशाला का भव्य उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस प्रांगण में 200 से ज्यादा आधुनिक सुख–सुविधा युक्त कमरे व 3000 साधर्मियों के भोजन की उत्तम व्यवस्था की गई है।

उद्घाटन समारोह में प्रात: काल पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के तत्पश्चात् शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, जिसमें कई विशिष्ट अतिथियों में श्री अशोकजी यादव, श्री योगेशजी निर्गुड, श्री हँसमुखभाई वोरा, श्री नेमिषभाई शाह, श्री मधुभाई शाह, श्री राजेशभाई, श्री नवीनभाई, श्री अक्षयभाई, श्री केतनभाई, श्री हितेनभाई, श्री अनुजभाई एवं विद्वत्वर्ग में श्री वजुभाई साहेब, बाल ब्र. हेमन्तभाई गांधी, पण्डित सुभाषभाई सेठ, पण्डित बाबूभाई महेता, पण्डित शैलेषभाई, पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित अभिषेकजी जैन, पण्डित राहुलजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

170 तीर्थंकर मण्डल विधान सम्पन्न

टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 09 से 13 दिसम्बर 2021 तक श्री 1008 सीमन्धर जिनालय में श्री 170 तीर्थंकर मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री ज्ञानचंदजी जैन शिक्षक गुढ़ा, पण्डित अरविंदजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं संजयजी जैन हल्ले ज्ञानपुष्प परिवार टीकमगढ़ ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के निर्देशन में सम्पन्न इस विधान में पण्डित समकितजी शास्त्री सागर का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण श्रीमती प्रेम धर्मपत्नी डॉ. सुरेशचंद्रजी बजाज परिवार द्वारा, मण्डप उद्घाटन श्रीमती विद्या धर्मपत्नी डॉ. हीरालालजी जैन गुढ़ा परिवार द्वारा एवं श्री ज्ञानपुष्पजी परिवार द्वारा मंगलकलश विराजमान किया गया।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: 170 तीर्थंकर मण्डल विधान एवं दोपहर में बाल ब्र. ममता दीदी के व्याख्यान हुए। सायंकाल बाल कक्षा, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के इन भावों के परिणाम पर आकर्षक प्रवचन एवं जैन पौराणिक वैराग्ययुक्त कथाओं का आयोजन हुआ।

स्थानीय विद्वानों में पण्डित राजेन्द्रजी चंदौली, पण्डित सुरेशचंदजी पिपरा, पण्डित अरविंदजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित कमलेशजी शास्त्री, पण्डित निशंकजी शास्त्री, पण्डित दीपकजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री, पण्डित राजेशजी शास्त्री आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

हार्दिक शुभकामनाएँ

आबूधावी–सरकार (यू.ए.ई.) : विश्वशांति में विभिन्न–दर्शनों का योगदान विषय पर एक विश्वकोश बनाने का उपक्रम लगभग तीन वर्ष पूर्व प्रवर्तित हुआ था। जैनदर्शन का विश्वशांति में योगदान इस विषय पर आलेख लिखने के लिए विश्वभर में जैनदर्शन के मनीषियों से सम्पर्क किया गया, जिसके अन्तर्गत **प्रो. सुदीपकुमारजी शास्त्री, नई दिल्ली** ने उनके अनुरोध पर जैनदर्शन के तथ्यों के आधार पर अपनी संक्षिप्तिका लिखकर भेजी। चयनित–विद्वानों को लगभग 50-60 पृष्ठों में पूरी सामग्री सप्रमाण एवं निर्विवाद–ढंग से लिखकर भेजने को कहा गया।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि एकमात्र प्रो. सुदीपकुमारजी जैन, नई दिल्ली का आलेख ही इस विश्वकोश में प्रकाशनार्थ स्वीकृत किया गया है; एतदर्थ उन्हें 7000/–USD (लगभग 5,20,000/–) की सम्मान–राशि समर्पित की गई। उनके आलेख को विश्व की सभी प्रमुख–भाषाओं में प्रकाशित किया जाएगा।

समवशरण शिलान्यास सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, नेमिनाथ जैन कॉलोनी हिरणमगरी, सेक्टर–3 में सातवाँ वार्षिकोत्सव एवं समवशरण शिलान्यास कार्यक्रम 11 दिसम्बर 2021 को डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आयोजित श्री रत्नत्रय मण्डल विधान पण्डित अश्विनजी नानावटी, ब्र. नन्हेभैया सागर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित नीलेशजी शास्त्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

समवशरण का शिलान्यास जयेन्द्रकुमारजी नरेन्द्रकुमारजी पुत्रश्री निर्मलकुमारजी पंचोली परिवार अहमदाबाद द्वारा किया गया। विधान आमंत्रणकर्ता श्री शांतिलालजी सुरेशकुमारजी अखावत रहे। समवशरण में प्रथम ईंट श्री पवनजी अखावत परिवार, द्वितीय ईंट श्री अजितजी गोर्धनोत परिवार एवं तृतीय ईंट श्री मोहनजी जसावत परिवार द्वारा स्थापित की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सी.पी. जैन एवं मुख्य अतिथि डॉ. पारसजी अग्रवाल रहे। मंगलाचरण सुश्री निपेक्षा जैन ने, अतिथियों का स्वागत ट्रस्ट के अध्यक्ष शांतिलालजी अखावत ने एवं आभार प्रदर्शन श्री राजमलजी टिम्बरबा ने किया। महामंत्री डॉ. महावीरप्रसादजी ने समवशरण व मंदिर की रूपरेखा प्रस्तुत की।

नवम् वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनांक 24 से 26 दिसम्बर 2021 तक सीमन्धर जिनालय का नवम् वार्षिकोत्सव एवं 170 तीर्थंकर विधान अत्यंत हर्ष उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह का आगाज़ श्रीजी की भव्य शोभायात्रा, ध्वजारोहण, आदि कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसमें अध्यात्म रस की गंगा बहाने प्रवचनकार के रूप में डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ एवं विधानाचार्य के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री धवल व पण्डित सुनीलजी धवल, भोपाल का समागम प्राप्त हुआ।

इस समारोह में प्रात: जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् दो प्रवचन दोपहर में 170 तीर्थंकर विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त फिर दो प्रवचन व पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत "कौन बनेगा ज्ञानपति" कार्यक्रम करवाया, जिसकी सभी ने सराहना की। इस प्रसंग पर सीमन्धर जिन भक्ति मंडल का गठन हुआ, जिसमें सभी युवा महिलाओं–पुरुषों ने रविवार को पूजन एवं संगोष्ठी का संकल्प लिया।

द्वितीय शतक : रोला शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(रोला)

अपने में एकत्व और पर से विभक्तता।
इसको कहते हैं एकत्व–विभक्त आतमा।।
यह एकत्व–विभक्त आतमा समयसार में।
समझाया है कुन्दकुन्द आचार्यदेव ने।।१।।

अनन्त गुणों एवं असंख्य परदेशों की यह।
और अनन्तानन्त त्रिकाली पर्यायों की।।
पूरी अखण्डता ही है रे एकत्व हमारा।
परद्रव्यों से अरे भिन्नता ही विभक्तता।।२।।

इस एकत्व–विभक्त आतमा का आराधन।
ज्ञान–ध्यान–श्रद्धान यही है इसका साधन।।
ज्ञान–ध्यान–साधन–आराधन कुछ भी कह लो।
यह ही सच्चा मोक्षमार्ग है यही समझ लो।।३।।

यह एकत्व–विभक्त आतमा परद्रव्यों का।
स्वामी–कर्त्ता–भोक्ता कैसे हो सकता है?।।
यह असीम आतम अपने में ही सीमित है।
इसीलिए तो सीमन्धर कहते हैं इसको।।४।।

अपने में सीमित होकर भी यह शुद्धातम।
है असीम ज्ञेयों का ज्ञायक यह परमातम।।
यह अपार ज्ञेयों के पार को पा लेता है।
इसकी गौरव गरिमा का न आर–पार है।।५।।

यद्यपि जाने सभी द्रव्य–गुण–पर्यायों को।
पर उनमें कुछ भी कर सकता नहीं आतमा।।
कर्त्ता–भोक्ता सभी द्रव्य हैं अपने–अपने।
स्वामी भी हैं सभी द्रव्य बस अपने–अपने।। ६।।

जाने जाते सभी द्रव्य इस आत्मद्रव्य से।
अरे एक गुण ऐसा भी है सब द्रव्यों में।।
प्रमेयत्वगुण कहते हैं उसको श्रीजिनवर।
उसके कारण सभी द्रव्य जाने जाते हैं।।७।।

अरे ज्ञान से जाने सबको यह परमातम।
प्रमेयत्व से सभी द्रव्य जाने जाते हैं।।
अरे ज्ञान है अतः जानता है यह आतम।
प्रमेयत्व है अतः आतमा जाना जाता।।८।।

शेष सभी में ज्ञान नहीं है नहीं जानते।
प्रमेयत्व से केवल वे जाने जाते हैं।।
अतः जानना लक्षण है चेतन आतम का।
चेतनता ही चेतन की गौरव गरिमा है।।९।।

अरे चेतना दो प्रकार की होती जग में।
ज्ञानचेतना अज्ञानचेतना के भेदों से।।
अज्ञानचेतना भी होती है दो प्रकार की।
कर्मचेतना और कर्मफल[१] के भेदों से।।१०।।

पर के करने–धरने में ही अरे चेतना।
कर्मचेतना कहलाती है कर्त्तापन से।।
और कर्म के फल में ही रत रहना भाई !
अरे कर्मफल कहलाती है भोक्तापन से।।११।।

पर का कर्त्ता–भोक्तापन अज्ञानचेतना।
ज्ञाता–दृष्टा रहना ही है ज्ञानचेतना।।
ज्ञानचेतना मुक्ति है मुक्ति का मग है।
भव कारण अज्ञानचेतना कही गई है।।१२।।

अपने आतम में अपनापन ज्ञानचेतना।
आतम में ही जमना–रमना ज्ञानचेतना।।
अरे आतमा का अनुभव है ज्ञानचेतना।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है ज्ञानचेतना।।१३।।

१. कर्मफलचेतना

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

13 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 120 – जिस प्रकार दृष्टि के विषय में गुण अखण्ड अभेदपने शामिल हैं, पर गुणभेद नहीं; उसी प्रकार दृष्टि के विषय में पर्यायें भी अभेदपने शामिल हो सकती हैं क्या?

उत्तर – नहीं, पर्यायें शामिल नहीं हो सकतीं, क्योंकि पर्यायें विषयी हैं, विषय बनाने वाली हैं, अत: वे विषय में शामिल नहीं हो सकती।

प्रश्न 121 – क्या वर्तमान अभेद पर्याय दृष्टि के विषय में मिल सकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – नहीं, वर्तमान पर्याय भिन्न रहकर द्रव्य को विषय बनाती है, इसीलिए वह दृष्टि के विषय में शामिल नहीं होती।

प्रश्न 122 – पर्याय को अभेद क्यों कहा जाता है?

उत्तर – पर्याय अभेद अखण्ड द्रव्य की ओर ढलती है – इस अपेक्षा उसे अभेद कहा जाता है।

प्रश्न 123 – दृष्टि के विषय में काल(पर्याय) किस रूप में शामिल है?

उत्तर – अनुस्यूति से रचित प्रवाह के रूप में अर्थात् प्रवाह की निरंतरता के रूप में काल (पर्याय) शामिल है।

प्रश्न 124 – अनुस्यूति से रचित प्रवाह गुण है या पर्याय?

उत्तर – गुण

प्रश्न 125 – यदि व्यवहार नय हेय है तो उसका कथन ही क्यों किया गया है?

उत्तर – व्यवहार के बिना निश्चय का कथन अशक्य होने से व्यवहार का कथन किया गया है अथवा निश्चय नय का प्रतिपादक होने से व्यवहार का कथन किया गया है।

प्रश्न 126 – गाथा आठ की टीका में पंचलब्धियों की ओर किस प्रकार संकेत किया गया है?

उत्तर – आत्मा के बारे में जानने की पात्रता क्षयोपशम लब्धि को सूचित करता है। समझ में न आने पर क्रोधित न होना, अरुचि प्रदर्शित नहीं करना और टकटकी लगाकर देखते ही रहना विशुद्धि लब्धि को सूचित करता है। आचार्यदेव के द्वारा समझाना देशना लब्धि को सूचित करता है। प्रसन्नचित्त से देशना को सुनना, समझने में चित्त लगाना प्रायोग्य लब्धि को सूचित करता है और गुरु वचन का मर्म ख्याल में आते ही बोध तरंगों का उछलना करण लब्धि का सूचक है।

(क्रमश:)

वैराग्य समाचार

1) द्रोणगिरी निवासी **श्रीमान सुरेशचंदजी जैन** का दिनांक 13 दिसम्बर 2021 को प्रात: शान्त परिणामों पूर्वक देह वियोग हुआ। आपकी तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में गहरी रूचि थी फलस्वरूप आप सिद्धायतनादि संस्थाओं से भी जुड़े रहे। आप पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के बड़े भाई एवं श्री सतीशजी के पूज्य पिताश्री थे।

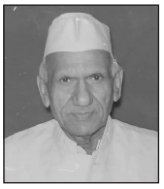

2) दिल्ली मुमुक्षु जैन समाज के वरिष्ठ व वयोवृद्ध बाबूजी **श्री पृथ्वीचंदजी जैन** का 16 दिसम्बर 2021 को रात्रि में आत्मचिंतन पूर्वक देह परिवर्तन हुआ। आप सरलस्वभावी, मुमुक्षु समाज के गौरव, गहन तत्त्वाभ्यासी, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के शिष्य एवं आत्मार्थी ट्रस्ट घेवरा मोड़ के प्रमुख संस्थापक ट्रस्टी रहे। आपका वियोग दिल्ली की मुमुक्षु समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

3) कवठेसार (कोल्हापूर) निवासी **श्री श्रीपालजी भोकरे** का दिनांक 19 दिसम्बर 2021 को सल्लेखना पूर्वक देहावसान हो गया है। ज्ञातव्य है कि आप श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययनरत शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्र महावीर भोकरे के दादाश्री हैं।

4) मुजफ्फरनगर मूलनिवासी **पण्डित श्री मनोजकुमारजी जैन** (चीनी वालों) का दिनांक 24 दिसम्बर 2021 को मध्य रात्रि में हृदय रोग के कारण आकस्मिक निधन हो गया है।

आपका पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में सक्रिय योगदान रहता था। आप जिनवाणी माँ की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। आपके द्वारा अनेक ग्रंथों को ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण कर चिरकाल तक सुरक्षित करने का महान कार्य किया गया है। विगत 40 वर्षों से आप निरन्तर स्वाध्याय के प्रति रुचिवन्त थे; एतदर्थ आपने अपने घर में ही एक विशाल पुस्तकालय का भी निर्माण किया। आपके चिरवियोग से मुमुक्षु समाज को बहुत बड़ी हानि हुई है।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों एवं इस दु:खद घड़ी में परिवारजन तत्त्वज्ञान के अवलंबन से समभाव धारण करें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

मानस्तम्भ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

खुरई (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 से 24 दिसम्बर 2021 तक सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब मानस्तम्भ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचंदजी सनावद के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर के निर्देशन, पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर, पण्डित सुबोधकुमारजी शाहगढ़, ब्र. नन्हे भैयाजी सागर, पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन एवं श्री रमेशकुमारजी सनावद के सहयोग एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री के संयोजन में हुआ। प्रवचनकार के रूप में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित सुदीपकुमारजी बीना रहे।

ध्वजारोहण श्री सुनीलकुमारजी सराफ परिवार सागर व पण्डित शिखरचंदजी परिवार विदिशा ने किया। सिंहद्वार के श्री राजकुमारजी जैन परिवार सागर, प्रतिष्ठा मण्डप के श्री नरेन्द्रजी भण्डारी सागर व श्री देवेन्द्रजी बड़कुल, मंच के श्री गुलाबचंदजी जैन सागर, श्री ऋषभकुमारजी सागर व श्री विकासकुमारजी मोदी सागर एवं वेदी के श्री अशोककुमारजी जैन भोपाल उद्घाटनकर्ता रहे। श्री अनंतभाई सेठ परिवार व श्री निमेषभाई शाह परिवार मुंबई, श्री प्रदीपकुमारजी जैन परिवार खुरई, श्री देवचंदजी जैन परिवार खुरई, श्री अशोककुमारजी परिवार खुरई एवं श्रीमंत धर्मेन्द्रकुमारजी सेठ परिवार खुरई द्वारा जिनबिम्बों को मानस्तम्भ पर विराजित किया गया।

महोत्सव की सफलता में माननीय श्री भूपेन्द्रसिंहजी(नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री, म.प्र.), श्री जयंतजी मलैया(पूर्व मंत्री, म.प्र.), श्री शैलेन्द्रजी जैन(विधायक) श्री प्रकाशचंदजी सराफ, श्री गुलराजजी समैया, श्रीमंत हर्षिलजी सेठ, श्री अजितजी चौधरी, श्री जिनेन्द्रजी गुरहा, श्री विनयकुमारजी जैन, श्री राजेशकुमारजी जैन एवं श्री नीरजकुमारजी सराफ का विशेष सहयोग रहा।

आरोन पंचकल्याणक में विद्वत् संगोष्ठियाँ

दिनांक 20 दिसम्बर 2021 को दोपहर में **पंचकल्याणक कब क्यों और कैसे??** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अरुणजी मोदी सागर ने की। मुख्य अतिथि पण्डित महावीरजी पाटिल एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री रहे। संचालन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर से किया।

पण्डित आप्त अनुशीलजी शास्त्री दमोह, पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन, ब्र. निखिलजी शास्त्री मुंबई, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन ने पंचकल्याणक के स्वरूप को स्पष्ट किया।

दिनांक 23 दिसम्बर को आयोजित गोष्ठी का विषय **विश्व तत्त्व प्रकाशक सर्वज्ञता** रखा गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित प्रेमचंदजी बजाज कोटा ने की। मुख्य अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्रीमान अजितप्रसादजी दिल्ली एवं श्रीमान आदीशजी जैन दिल्ली रहे। संचालन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने किया।

पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन, पण्डित आशुतोषजी शास्त्री आरोन, ब्र. महेन्द्रभैयाजी अमायन, पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना एवं पण्डित मनीषजी कहान ने सर्वज्ञता के स्वरूप को स्पष्ट किया।

तत्त्ववेता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल पुरस्कार-2022

पण्डित संयम शास्त्री पुत्रश्री डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर को जैनागम, न्याय, अध्यात्म शास्त्रों के गहन व सन्तुलित अध्ययन, उसके प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देने एवं अनेक विद्वत् संगोष्ठियों का आयोजन-संचालन करने हेतु **सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट** द्वारा **डॉ. हुकमचंद भारिल्ल पुरस्कार** से पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कार मोदी परिवार, मकरोनिया के सौजन्य से मई में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर प्रदान किया जाएगा। - संजय शास्त्री, जयपुर

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2021

प्रति,